सऊदी अरब में सीरत नगारी के आलमी मुक़ाबला में अव्वल आने वाली एवार्ड याफ़्ता किताब

अर-रहीकुल मख़्तूम
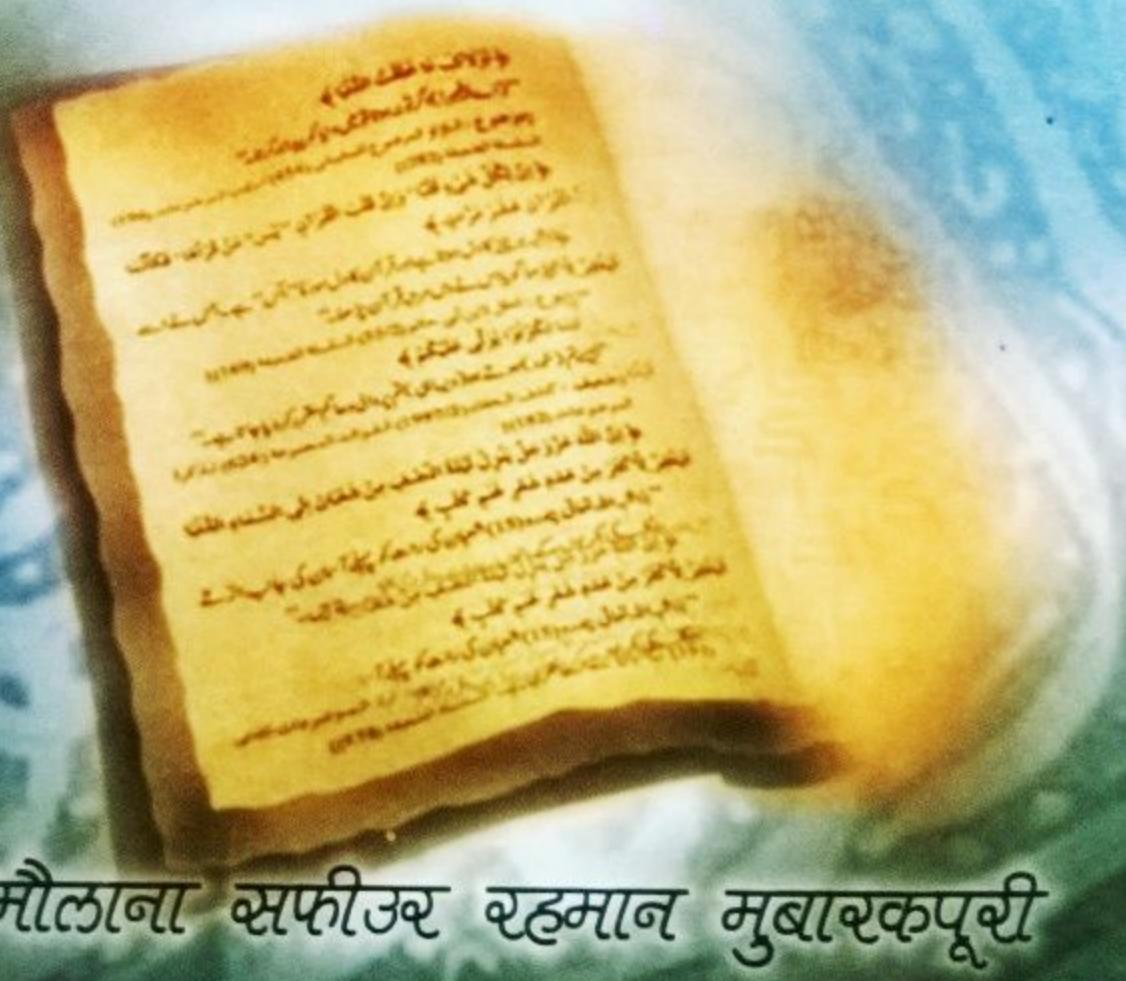
मौलाना सफ़ीउर रह्मान मुबारकपूरी

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय | पृष्ठ

विषय पृष्ठ

दुआ व तबरीक

—मुहद्दिसे जलील हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब शैख़ुलहदीस रहमानी हफ़िज़ल्लाहु, लेखक 'मिरआतुल मफ़ातीह', शरह 'मिश्कातुल मसाबीह

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत (जीवन-चर्या) पर किसी फ़ायदेमंद, जामेअ और सही और सच्ची किताब का लिखना बड़ा नाज़ुक काम है, मुझे ख़ुशी है कि हमारे अज़ीज़ सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी, उस्ताद जामिया सलफ़ीया बनारस ने 'अर-रहीक़ुल मख़्तूम' के नाम से एक ऐसी किताब तर्तीब दी, जो सीरत व तारीख़ के ख़ास माहिरों की नज़र में आलमी मुक़ाबले (विश्व प्रतियोगिता) के अन्दर नम्बर एक की हक़दार क़रार पाई और अब उसका हिन्दी एडीशन छप रहा है।

मेरी दुआ है कि अल्लाह इस किताब को ख़ैर व बरकत का ज़रिया बनाए, आम व ख़ास लोग इससे फ़ायदा उठाएं और यह लिखने वाले के लिए बख़्शिश और अज्र व सवाब की बढ़ोत्तरी की वजह हो।

व मा ज़ालि-क अलल्लाहि बिअज़ीज़०

उबैदुल्लाह रहमानी

14 शाबान सन् 1408 हि०

दो बातें

—शेख मुहम्मद अली अल-हरकान, सिक्रेट्री जनरल राबिता आलमे इस्लामी, मक्का मुकर्रमा

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, ख़ालिक़िस्समावाति वल अर्ज़ि व जाअिलिज़-ज़ुलुमाति वन्नूरि व सल्लल्लाहु अला सय्यिदिना मुहम्मदिन ख़ातमिल अम्बियाइ वर-रुसुलि अजमईन बश-श-र व अन-ज़-र व व-अ-द व औ-अ-द अन-क़ज़ल्लाहु बिहिल ब-श-र मिनज़-ज़लालतिन व ह-द-न्ना-स इलस्सिरातिल मुस्तक़ीम सिरातिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िलअर्ज़ि अला इलल्लाहि तुसीरुल उमूरि व बादु०

चूंकि अल्लाह ने अपने रसूल को शफ़ाअत का पद और ऊंचा दर्जा अता फ़रमाया है और आपसे हम मुसलमानों को मुहब्बत करने की हिदायत दी है और आपकी पैरवी को अपनी मुहब्बत की निशानी क़रार दिया है, चुनांचे फ़रमाया है —

'(ऐ पैग़म्बर सल्ल० !) कह दो, अगर तुम्हें अल्लाह से मुहब्बत है, तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम्हें प्रिय रखेगा और तुम्हारे गुनाहों को तुम्हारे लिए बख़्श देगा।'

इसलिए यह भी एक वजह है जो दिलों को आपके प्रेम से भर कर उन साधनों की खोज में डाल देता है जो आपके सम्बन्धों को मज़बूत कर दें, चुनांचे इस्लाम की शुरूआत ही से मुसलमान आपके गुणों के बखान में और आपकी पाक सीरत के प्रचार-प्रसार में एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश करते रहे हैं। आपकी पाक सीरत नाम है आपकी बातों, आपके कामों और आपके आदर्श चरित्र व आचरण का। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, 'क़ुरआन ही आपका अख़्लाक़ (चरित्र व आचरण) था, और मालूम है कि क़ुरआन, अल्लाह की किताब, कलिमाते ताम्मा (पूर्ण वार्ता) का नाम है, इसलिए जिस पवित्र हस्ती का यह गुण है, वह निश्चित रूप से तमाम इंसानों से बेहतर और पूर्ण है और पूरी दुनिया के इंसानों की मुहब्बत की सबसे ज़्यादा हक़दार है।

यह मूल्यवान प्रेम व आस्था मुसलमानों के दिल व जान की पूंजी सदा ही रही और इसी के क्षितिज से नबी सल्ल० की पहली कान्फ्रेंस का नूर फूटा। यह कांफ्रेंस सन् 1396 हि० में पाकिस्तान के भू-भाग पर आयोजित हुई और राबिता ने इस कान्फ्रेंस में एलान किया कि नीचे की शर्तों पर पूरे उतरने वाले सीरत के

पांच सबसे अच्छे लेखकों पर डेढ़ लाख सऊदी रियाल के आर्थिक पुरस्कार दिए जाएंगे। शर्तें ये हैं—

1. लेख पूर्ण हो और उसमें ऐतिहासिक घटनाएं अपने समय की दृष्टि से क्रमवार लिखी गई हों।

2. लेख बहुत अच्छा हो और इससे पहले प्रकाशित न किया गया हो।

3. लेख की तैयारी में जिन पांडुलिपियों और दस्तावेज़ों पर भरोसा किया गया हो, उन सब के हवाले पूर्ण रूप से दिये गये हों।

4. लेखक अपने जीवन के पूर्ण और विस्तृत हालात लिखे और अपनी सनदों और अपनी लिखी किताबों का—अगर हों तो उल्लेख करे।

5. लेख साफ़-सुथरा और स्पष्ट हो, बल्कि बेहतर होगा कि टाइप किया हुआ हो।

6. लेख अरबी और दूसरी जीवंत भाषाओं में स्वीकार किए जाएंगे।

7. पहली रबीउस्सानी सन् 1396 हि० से लेखों की वसूली शुरू की जाएगी और पहली मुहर्रम सन् 1397 हि० को ख़त्म कर दी जाएगी।

8. लेख राबिता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा के सिक्रेट्रियट को मुहरबन्द लिफ़ाफ़े के अन्दर पेश किए जाएं। राबिता उन पर अपना एक ख़ास नम्बर डालेगा।

9. अकाबिर उलेमा (महान विद्वानों) की एक उच्चस्तरीय कमेटी तमाम लेखों की छानबीन और जांच-पड़ताल करेगी।

राबिता के इस एलान ने नबी सल्ल० के प्रेम में डूबे हुए ज्ञानियों को प्रोत्साहित किया और उन्होंने इस मुक़ाबले में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इधर राबिता आलमे इस्लामी भी अरबी, अंग्रेज़ी, उर्दू और अन्य भाषाओं में वसूली और स्वागत के लिए तैयार था।

फिर हमारे माननीय भाइयों ने अनेक भाषाओं में लेख भेजने शुरू किए, जिनकी तायदाद 171 तक जा पहुंची। इनमें 84 लेख अरबी भाषा में थे, 64 उर्दू में, 21 अंग्रेज़ी में, एक फ्रांसीसी में और एक हौसा भाषा में।

राबिता ने इन लेखों को जांचने और विजेताओं की श्रेणी बनाने के लिए महान विद्वानों की एक कमेटी बना दी और पुरस्कार पाने वालों का क्रम इस तरह रहा—

1. पहला पुरस्कार : शेख़ सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी, जामिया सलफ़ीया हिंद, पचास हज़ार सऊदी रियाल

2. दूसरा पुरस्कार : डा० माजिद अली ख़ां, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, हिंद, चालीस हज़ार सऊदी रियाल

3. तीसरा पुरस्कार : डा० नसीर अहमद नासिर, अध्यक्ष जामिया मिल्लिया इस्लामिया, भावलपुर, पाकिस्तान, तीस हज़ार सऊदी रियाल,

4. चौथा पुरस्कार : उस्ताद हामिद महमूद, मुहम्मद मंसूर लेमूद, मिस्र, बीस हज़ार सऊदी रियाल,

5. पांचवां पुरस्कार : उस्ताद अब्दुस्सलाम हाशिम हाफ़िज़, मदीना मुनव्वरा सऊदी अरब, दस हज़ार सऊदी रियाल।

राबिता ने इन पुरस्कार विजेताओं के नामों का एलान शाबान 1398 हि० के महीने में कराची (पाकिस्तान) में आयोजित पहली एशियाई इस्लामी कान्फ्रेंस में किया और प्रकाशन के लिए तमाम अख़बारों को इसकी सूचना दे दी।

फिर पुरस्कार वितरण के लिए राबिता ने मक्का मुकर्रमा में अपने हेड क्वार्टर पर अमीर सऊद बिन अब्दुल मोहसिन बिन अब्दुल अज़ीज़ की अध्यक्षता में शनिवार 12 रबीउल आख़र सन् 1399 हि० की सुबह में एक भव्य समारोह का आयोजन किया। अमीर सऊद मक्का मुकर्रमा के गवर्नर अमीर फ़वाज़ बिन अब्दुल अज़ीज़ के सिक्रेट्री हैं और इस समारोह में उनके नायब की हैसियत से उन्होंने पुरस्कार वितरित किए।

इस मौक़े पर राबिता के सिक्रेट्रियट की ओर से यह एलान भी किया गया कि इन सफल लेखों को विभिन्न भाषाओं में छपवा कर बांटा जाएगा, चुनांचे इसको व्यवहार रूप देते हुए शेख़ सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी जामिया सलफ़ीया हिंद का (अरबी) लेख सबसे पहले छपवा कर पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया गया, क्योंकि उन्होंने ही पहला पुरस्कार प्राप्त किया है। इसके बाद बाक़ी लेख भी क्रमवार छापे जाएंगे।

अल्लाह से दुआ है कि हमारे कामों को अपने लिए ख़ालिस बनाए और उन्हें स्वीकार करे। निश्चित रूप से वह बेहतरीन मौला और बेहतरीन मददगार है। व सल्लल्लाहु अला सय्यिदिना मुहम्मदिन व अला आलिही व सह्बिही व सल्लिम०

मुहम्मद अली अल-हरकान

सिक्रेट्री जनरल राबिता आलमे इस्लामी

मक्का मुकर्रमा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यह किताब

अल-हम्दु लिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि व अला आलिही व सह्बिही व मन वालाहु० अम्मा बाद०

यह रबीउल अव्वल सन् 1396 हि० (मार्च 1976 ई०) की बात है कि कराची में पूरी दुनिया की पहली 'सीरत कान्फ्रेंस' (पवित्र जीवनी कांफ्रेंस) हुई, जिसमें राबिता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और इस कान्फ्रेंस के अन्त में सारी दुनिया के क़लमकारों को दावत दी कि वे नबी सल्ल० की सीरत के विषय पर दुनिया की किसी भी ज़िंदा ज़ुबान में लेख लिखें। पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवी पोज़ीशन प्राप्त करने वालों को क्रमवार पचास, चालीस, तीस, बीस और दस हज़ार रियाल के इनाम दिए जाएंगे। यह एलान राबिता के सरकारी अख़बार 'अल-आलमुल इस्लामी' के कई एडीशनों में छपा, लेकिन मुझे इस प्रस्ताव और एलान का समय पर ज्ञान न हो सका, बल्कि कुछ देर से हुआ।

कुछ दिनों बाद जमईयत अहले हदीस हिंद के आर्गन पन्द्रह दिवसीय 'तर्जुमान' दिल्ली में राबिता के इस प्रस्ताव और एलान का उर्दू अनुवाद छपा, तो मेरे लिए एक विचित्र स्थिति पैदा हो गई। जामिआ सलफ़ीया के मध्यम और उच्च श्रेणी के छात्रों में से आम तौर से जिस किसी से सामना होता, वह मुझे इस मुक़ाबले में शरीक होने का मश्विरा देता। ख़्याल हुआ कि शायद 'लोगों की यह ज़ुबान' 'ख़ुदा का नक़्क़ारा' है, फिर भी मुक़ाबले में हिस्सा न लेने के अपनी दिली फ़ैसले पर मैं क़रीब-क़रीब अटल रहा। कुछ दिनों बाद छात्रों के 'मश्विरे' और 'तक़ाज़े' भी लगभग समाप्त हो गये, पर दो एक छात्र अपने तक़ाज़े पर जमे रहे। कुछ ने लेख के प्रारूप (तस्नीफ़ी ख़ाके) को वार्ता का विषय बना रखा था और किसी-किसी का चाव दिलाना आग्रह (इसरार) की आख़िरी हदों को छू रहा था। आख़िरकार मैं अच्छी-भली झिझक और हिचकिचाहट के साथ तैयार हो गया।

काम शुरू किया, लेकिन थोड़ा-थोड़ा, कभी-कभी और धीमे-धीमे।

अभी शुरूआत ही थी कि रमज़ान की बड़ी छुट्टी का वक़्त आ गया। उधर राबिता ने आने वाले मुहर्रमुलहराम की पहली तारीख़ को लेखों की वसूली की आख़िरी तारीख़ क़रार दिया था। इस तरह काम के कोई साढ़े पांच महीने गुज़र चुके थे और अब ज़्यादा से ज़्यादा साढ़े तीन महीने में लेख पूरा करके डाक के

हवाले कर देना ज़रूरी था, ताकि समय पर पहुंच जाए और इधर अभी सारा काम बाक़ी था। मुझे यक़ीन नहीं था कि इस थोड़े से समय में लिखने, दोबारा नज़र डालने, नक़ल करके साफ़ मस्विदा तैयार करने का काम हो सकेगा, पर आग्रह करने वालों ने चलते-चलते ताकीद की कि किसी तरह की ग़फ़लत या बेजा सोच-विचार के बिना काम में जुट जाऊं। रमज़ान बाद 'सहारा' दिया जाएगा। मैंने भी छुट्टी के दिनों को ग़नीमत जाना, क़लम उठाया और कोशिश के अथाह समुद्र में कूद पड़ा। पूरी छुट्टी लुभावने सपने की तरह बीत गई और जब ये लोग वापस पलटे तो लेख का दो तिहाई भाग लिखा जा चुका था। चूंकि दोबारा नज़र डालने और मस्विदा को साफ़-सुथरा बनाने का मौक़ा न था, इसलिए असल मस्विदा ही इन लोगों के हवाले कर दिया कि नक़ल करने और साफ़-सुथरा बनाने का काम कर डालें। बाक़ी हिस्से के लिए कुछ दूसरी ज़रूरी सामग्री के जुटाने और तैयार करने में भी उनसे कुछ मदद ली। जामिया की ड्युटी और घमाघमी शुरू हो चुकी थी, इसलिए छुट्टी के दिनों की तेज़ी को बाक़ी रखना संभव न था, फिर भी डेढ़ महीने के बाद जब ईदे क़ुर्बां का वक़्त आया, तो 'शब बेदारी' (रतजगे) की 'बरकत' से लेख तैयारी के आख़िरी मरहले में था, जिसे सरगर्मी की एक छलांग ने पूर्णता को पहुंचा दिया और मैंने मुहर्रम शुरू होने से बारह-तेरह दिन पहले यह लेख (पुस्तक) डाक के हवाले कर दिया।

महीनों बाद मुझे राबिता के दो रजिस्टर्ड पत्र आठ-दस दिन के आगे-पीछे मिले। सार यह था कि मेरा लेख राबिता की तै की हुई शर्तों के मुताबिक़ है, इसलिए मुक़ाबले (प्रतियोगिता) में शामिल कर लिया गया है। मैंने चैन का सांस लिया।

इसके बाद दिन पर दिन गुज़रते रहे, यहां तक कि डेढ़ साल की मुद्दत बीत गई, पर राबिता चुप था। मैंने दो बार पत्र लिखकर मालूम करना भी चाहा कि इस सिलसिले में क्या हो रहा है, फिर भी चुप्पी न टूटी। फिर मैं ख़ुद भी अपने कामों और समस्याओं में उलझकर यह बात लगभग भूल गया कि मैंने किसी 'मुक़ाबला' में हिस्सा लिया है।

शाबान 1398 हि० के शुरू (तद० 6-7-8 जुलाई 1978) में कराची (पाकिस्तान) में पहली एशियाई इस्लामी कान्फ्रेंस का आयोजन हो रहा था। मुझे उसकी कार्रवाइयों से दिलचस्पी थी, इसलिए उसके बारे में अख़बार के कोनों में दबी हुई ख़बरें भी ढूंढ-ढूंढकर पढ़ता था। एक दिन भदोही स्टेशन पर ट्रेन के इन्तिज़ार में—जो लेट थी—अख़बार देखने बैठ गया। यकायक एक छोटी-सी ख़बर पर नज़र पड़ी कि इस कान्फ्रेंस की किसी मीटिंग में राबिता ने हज़रत मुहम्मद सल्ल०

की जीवनी पर लेख लिखने के मुक़ाबले में सफल होने वाले पांच नामों का एलान कर दिया है और उनमें एक लेख लिखने वाला हिन्दुस्तानी भी है। यह ख़बर पढ़ कर मन में अंदर ही अंदर जानकारी पाने की एक हलचल पैदा हो गई। बनारस वापस आकर सविस्तार जानने की बहुत कोशिश की, पर कोई फ़ायदा न हुआ।

10 जुलाई सन् 1978 ई० को चाश्त के वक़्त—पूरी रात मुनाज़रा बजरडीह की शर्तें तै करने के बाद बेख़बर सो रहा था कि अचानक हुजरे (कमरे) से मिली हुई सीढ़ियों पर छात्रों का शोर व हंगामा सुनाई पड़ा और आंख खुल गई। इतने में छात्रों का रेला कमरे के भीतर था। उनके चेहरों पर अथाह प्रसन्नता के चिह्न और ज़ुबानों पर मुबारकबादी के शब्द।

'क्या हुआ? क्या विरोधी मुनाज़िर ने मुनाज़रा करने से इंकार कर दिया?' मैंने लेटे-लेटे पूछा।

'नहीं, बल्कि आप हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी लिखने के मुक़ाबले में फ़र्स्ट आ गए।'

'अल्लाह, तेरा शुक्र है। आप लोगों को यह जानकारी कहां से मिली?' मैं उठकर बैठ चुका था।

'मौलवी उज़ैर शम्स यह ख़बर लाये हैं।'

'मौलवी उज़ैर यहां आ चुके हैं?'

'जी हां!'

और कुछ ही क्षणों बाद मौलवी उज़ैर पूरी बात विस्तार में बता रहे थे।

फिर 22 शाबान 1398 हि० (29 जुलाई 1978) को राबिता का रजिस्टर्ड पत्र मिला, जिसमें सफलता की ख़बर के साथ यह शुभ सूचना भी लिखी हुई थी कि मुहर्रम 1399 हि० के महीने में मक्का मुर्करमा के अन्दर राबिता कार्यालय में पुरस्कार-वितरण के लिए एक समारोह आयोजित किया जाएगा और उसमें मुझे शिर्कत करनी है।

यह समारोह मुहर्रम के बजाए 12 रबीउल आख़र 1399 हि० में आयोजित किया गया।

इस समारोह की वजह से मुझे पहली बार हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत नसीब हुई। 10 रबीउल आख़र, वृहस्पतिवार को अस्र से कुछ पहले मक्का मुर्करमा के नूरानी माहौल में दाख़िल हुआ। तीसरे दिन साढ़े आठ बजे राबिता के कार्यालय में हाज़िरी का हुक्म था। यहां ज़रूरी कार्रवाइयों के बाद लगभग दस बजे

क़ुरआन पाक की तिलावत से समारोह आरंभ हुआ। सऊदी उच्चतम न्यायालय के चीफ़ जस्टिस शेख़ अब्दुल्लाह बिन हुमैद अध्यक्षता कर रहे थे। मक्का के नायब गवर्नर अमीर सऊद बिन अब्दुल मोहसिन, जो मरहूम मलिक अब्दुल अज़ीज़ के पोते हैं, पुरस्कार-वितरण के लिए आए हुए थे। उन्होंने संक्षेप में भाषण दिया। उनके बाद राबिता के नायब सिक्रेट्री जनरल शेख़ अली मुख़्तार ने सम्बोधित किया। उन्होंने थोड़े विस्तार में बताया कि यह इनामी मुक़ाबला क्यों आयोजित किया गया और फ़ैसले के लिए क्या तरीक़ा अपनाया गया। उन्होंने स्पष्ट किया कि राबिता को मुक़ाबले के एलान के बाद एक हज़ार से ज़्यादा (अर्थात 1182) लेख मिले, जिनके अलग-अलग पहलुओं का जायज़ा लेने के बाद शुरूआती कमेटी ने एक सौ तिरासी लेखों को मुक़ाबले के लिए चुना और अन्तिम निर्णय के लिए उन्हें शिक्षा मंत्री शेख़ हसन बिन अब्दुल्लाह आले शेख़ के नेतृत्व में बनी विशेषज्ञों की एक आठ सदस्यीय कमेटी के हवाले कर दिया। कमेटी के ये आठों सदस्य मलिक अब्दुल अज़ीज यूनिवर्सिटी, जद्दा की शाखा कुल्लीयतुश-शरीआ (और अब जामिया उम्मुल क़ुरा) मक्का मुर्करमा के प्रोफेसर और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत (जीवन-चर्या) और इस्लामी तारीख़ के माहिर और विशेषज्ञ हैं। उनके नाम ये हैं—

डाक्टर इब्राहीम अली शऊत

डाक्टर अहमद सैयद दर्राज

डाक्टर अब्दुर्रहमान फ़हमी मुहम्मद

डाक्टर फ़ाइक़ बक्र सव्वाफ़

डाक्टर मुहम्मद सईद सिद्दीक़ी

डाक्टर शाकिर महमूद अब्दुल मुनइम

डाक्टर फ़िक्री अहमद उकाज़

डाक्टर अब्दुल फ़त्ताह मंसूर

इन विद्वानों ने लगातार छान-बीन के बाद सर्वसम्मति से पांच लेखों को नीचे लिखे क्रम के साथ पुरस्कार का हक़दार घोषित किया।

1. अर-रहीक़ुल मख़्तूम (अरबी), लेखक, सफ़ीउर्रहमान, मुबारकपुरी, जामिया सलफ़ीया, बनारस, हिंद (प्रथम)

2. ख़ातमुन्नबीयीन (अंग्रेज़ी), लेखक, डा० माजिद अली ख़ां, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली, हिंद (द्वितीय)

3. पैग़म्बरे आज़म व आख़िर (उर्दू) लेखक, डा० नसीर अहमद नासिर वायस

चांसलर जामिया इस्लामिया, भावलपुर, पाकिस्तान (तृतीय)

4. मुन्तक़न-नुक़ूल फ़ी सीरते आज़म रसूल (अरबी) लेखक, शेख़ हामिद महमूद बिन मुहम्मद मंसूर लेमूद, जीज़ा मिस्र (चतुर्थ)

5. सीरतुन्नबी अल हुदा वर-रहम: (अरबी), उस्ताद अब्दुस्सलाम हाशिम हाफ़िज़, मदीना मुनव्वरा, सऊदी अरब (पंचम)

नायब सिक्रेट्री जनरल मोहतरम शेख़ अली अल-मुख़्तार ने इन विस्तृत विवेचनों के बाद हौसला बढ़ाने, मुबारकबाद देने और दुआ के तौर पर कुछ बातें कहने के बाद अपना भाषण समाप्त किया।

इसके बाद मुझे अपना विचार रखने के लिए बुलाया गया। मैंने अपने संक्षिप्त भाषण में राबिता का ध्यान भारत में दावत व तब्लीग़ के कुछ ज़रूरी और छोड़े हुए पहलुओं की ओर खींचा और उसके प्रभावों और नतीजों पर रोशनी डाली। राबिता की ओर से इसका बड़ा ही हौसला बढ़ाने वाला जवाब दिया गया।

इसके बाद अमीर मोहतरम सऊद बिन अब्दुल मोहसिन ने क्रमवार पांचों पुरस्कार बांटे और क़ुरआन मजीद की तिलावत पर समारोह का अन्त हुआ।

17 रबीउल आख़र, वृहस्पतिवार को हमारे कारवां का रुख़ मदीना मुनव्वरा की ओर था। रास्ते में बद्र की ऐतिहासिक रण-भूमि को देखते हुए आगे बढ़े, तो अस्र से कुछ पहले हरम नबवी सल्ल० के दर व दीवार का जलाल व जमाल निगाहों के सामने था। कुछ दिनों बाद एक सुबह ख़ैबर भी गए और वहां का ऐतिहासिक क़िला अन्दर व बाहर से देखा, फिर कुछ घूम-घाम कर शाम ही को मदीना लौट आए और आख़िरी पैग़म्बर के उस जलवागाह और इस्लामी क्रान्ति-केन्द में दो सप्ताह बिता कर हम फिर हरमे काबा की ओर बढ़ चले। यहां तवाफ़ व सई के 'हंगामे' में एक सप्ताह और गुज़ारने का सौभाग्य मिला। रिश्तेदारों, दोस्तों, बुज़ुर्गों और उलेमा व मशाइख़ ने क्या मक्का, क्या मदीना, हर जगह हाथों-हाथ लिया। यों मेरे सपनों और आरज़ूओं की पवित्र भूमि हिजाज़ के अन्दर एक महीने की मुद्दत आंख झपकते ही बीत गई और मैं फिर भारत वापस आ गया।

हिजाज़ से वापस हुआ तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के उर्दू भाषियों की ओर से किताब को उर्दू रूप देने का तक़ाज़ा शुरू हो गया, जो कई वर्ष गुज़रने के बावजूद बराबर क़ायम रहा। इधर नए-नए काम इस तरह आते गये कि अनुवाद के लिए मौक़ा ही नहीं निकल पा रहा था, फिर भी काम की इसी भीड़ में उर्दू अनुवाद शुरू कर दिया गया और अल्लाह का बार-बार शुक्र अदा करने को जी

चाहता है कि कुछ महीनों की थोड़ी-सी कोशिश से यह काम पूरा हुआ। वलिल्लाहिल अमरु मिन क़ब्लु व मिन बाद०

(अब इस पुस्तक का हिन्दी एडीशन आपके हाथों में है। अनुवाद सरल, सुगम और सुन्दर शब्दों में करने की कोशिश की गई है। अल्लाह हिन्दी अनुवादक अहमद नदीम नदवी की इन कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए।)

अन्त में मैं उन तमाम बुज़ुर्गों, दोस्तों और प्रियजनों के प्रति आभार व्यक्त करना ज़रूरी समझता हूं कि जिन्होंने इस काम में किसी भी तरह का मुझे सहयोग दिया, मुख्य रूप से मोहतरम उस्ताद मौलाना अब्दुर्रहमान रहमानी और प्रियजन शैख़ उज़ैर और हाफ़िज़ मुहम्मद इलयास, मदीना युनिवर्सिटी के फ़ाज़िलों का कि उनके मश्विरे देने और हिम्मत बढ़ाने के कारण इस लेख (पुस्तक) की तैयारी में बड़ी मदद मिली। अल्लाह इन सबको भला बदला दे, हमारी हिमायत करे और हमारी मदद करे, किताब को क़ुबूल करे और लिखने वालों, सहायता करने वालों और फ़ायदा उठाने वालों के लिए लोक-परलोक की कामियाबी का ज़रिया बने। आमीन!

सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी

18 रमज़ानुल मुबारक 1404 हि०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुछ किताब के बारे में

(तीसरा एडीशन)

—महामहिम डाक्टर अब्दुल्लाह उमर नसीफ़, सिक्रेट्री जनरल राबिता आलमे इस्लामी, मक्का मुर्करमा

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिनिअमतिही ततिम्मुस्सालिहात व अश्हदु अल लाइला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू व सफ़ी-युहू व ख़लीलुहू अद्दर-रिसाल-त व ब-ल-ग़ल अमा-न-त व न-स-हल उम्म-त व त-र-कहा अलल मुहज्जतिल बैज़ा-अ लै-लहा कनहारिहा सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व सह्बिही अजमईन व रज़ि-य अन कुल्लि मन तबि-अ सुन्न-तहू व अमि-ल बिहा इला यौमिद्दीन व अन-ना म-अ-हुम बिअफ़्वि-क व रिज़ा-क या अर-हमर्राहिमीन, अम्मा बअद०

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत, जो रंगारंग उपहार और क़ियामत तक बाक़ी रहने वाला तोशा है और जिसको बयान करने और जिसके अलग-अलग पहलुओं पर पुस्तकें और ग्रन्थ लिखने के लिए लोगों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भेजे जाने के वक़्त से लेकर अब तक मुक़ाबला जारी है और क़ियामत तक जारी रहेगा। यह पावन सुन्नत मुसलमानों के सामने वह अमली नमूना और घटनापरक प्रोग्राम रखती है, जिसके सांचे में ढल कर मुसलमानों के चरित्र और आचरण को निखरना चाहिए और अपने पालनहार से उनका ताल्लुक़ और अपने कुंबे और क़बीले, भाइयों और मिल्लत के लोगों से उनका संपर्क और संबंध ठीक उसी प्रकार का होना चाहिए। अल्लाह का इर्शाद है—

'यक़ीनन तुम्हारे हर उस आदमी के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० में सबसे बेहतर नमूना है, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो, और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करता हो।'

और जब हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ कैसे थे? तो उन्होंने फ़रमाया, 'बस क़ुरआन ही आपका अख़्लाक़ था।'

इसलिए जो आदमी अपनी दुनिया व आख़िरत के तमाम मामलों में रब के बताये रास्ते पर चल कर इस दुनिया से निजात चाहता हो, उसके लिए इसके

सिवा कोई रास्ता नहीं कि वह प्यारे नबी सल्ल० के आचरण की पैरवी करे और ख़ूब अच्छी तरह समझ-बूझ कर इस यक़ीन के साथ नबी सल्ल० की सीरत को अपनाए कि यही पालनहार का सीधा रास्ता है, जिस पर हमारे आक़ा और पेशवा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अमली तौर पर भी और सच में भी ज़िंदगी के तमाम हिस्सों में चल रहे थे। इसलिए इसी में रहनुमाई करने वालों, पैरवी करने वालों, शासकों, शासितों, लीडरों, पीछे चलने वालों और मुजाहिदों के लिए हिदायत है और इसी में राजनीति और शासन, धन और अर्थ, सामाजिक मामले, इंसानी ताल्लुक़ात, लेन-देन, चरित्र-आचरण और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के तमाम ही मैदानों के लिए सबसे अच्छा आदर्श है।

आज, जबकि मुसलमान रब के बताए उस रास्ते से दूर हट कर अज्ञानता और पिछड़ेपन के खड्ड में जा गिरे हैं, उनके लिए क्या ही बेहतर होगा कि वे होश में आ जाएं और अपने पाठ्यक्रमों और विभिन्न सभाओं और सम्मेलनों में नबी सल्ल० की सीरत को इसलिए सूची में सबसे ऊपर रखें कि यह सिर्फ़ सोच-विचार का मामला ही नहीं है, बल्कि यही अल्लाह की ओर वापसी की राह है और इसी में लोगों का सुधार और सफलता है, क्योंकि यही अख़्लाक़ व अमल के मैदान में अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद को अपनाने का अमली तरीक़ा है, जिसके नतीजे में ईमान वाला अल्लाह की शरीअत का पाबन्द बन जाता है और उसे इंसानी ज़िंदगी के तमाम मामलों में अपना पंच मान लेता है।

यह किताब 'अर-रहीक़ुल मख़्तूम' अपने मान्य लेखक शेख़ सफ़ीउर्रहान मुबारकपुरी की एक सुन्दर कोशिश और शानदार कारनामा है, जिसे उन्होंने राबिता आलमे इस्लामी की ओर से आयोजित सीरत पर लिखने की प्रतियोगिता 1396 हि० के आम एलान पर पूरा किया और प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, जिसका विवेचन राबिता आलमे इस्लामी के पूर्व जनरल सिक्रेट्री मरहूम मुहम्मद अली अल-हरकान के पहले एडीशन की 'अपनी बात' में मिलता है।

यह किताब बड़ी लोकप्रिय रही और यह उनकी प्रशंसाओं का केन्द्र बन गई। चुनांचे पहले एडीशन की कुल की कुल (दस हज़ार) प्रतियां हाथों हाथ निकल गईं और मुझसे यह इच्छा व्यक्त की गई कि मैं इस तीसरे एडीशन का प्राक्कथन लिख दूं। चुनांचे उनकी इच्छा के सम्मान में मैंने यह संक्षिप्त प्राक्कथन लिख दिया। अल्लाह से दुआ है कि इस काम में खुलूस पैदा करे और इससे मुसलमानों को ऐसा फ़ायदा पहुंचाए कि उनका वर्तमान पिछड़ापन अच्छी स्थिति में बदल जाए, मुस्लिम उम्मत (समुदाय) को उसका खोया हुआ स्थान मिल जाए, विश्व-नेतृत्व का उच्च पद वापस मिल जाए और वह अल्लाह के इस कथन की

साक्षात मूर्ति बन जाए कि 'तुम बेहतरीन उम्मत हो, जो लोगों के लिए उठाए गए हो, भलाई का हुक्म देते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो।

व सल्लल्लाहु अलल मबऊसि रहमतिल लिल आलमीन, रसूलिल हद्‌यि व मुर्शदिल इन्सानीयति इला तरीक़िन नजाति वल फ़लाहि व अला आलिही व सह्बिही व सल्लम वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन॰

— डा॰ अब्दुल्लाह उमर नसीफ़

सिक्रेट्री जनरल राबिता आलमे इस्लामी,

मक्का मुर्करमा

अपना परिचय

अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सैयिदिल अव्वलीन वल आख़रीन मुहम्मदिन खातमिन्नबीयीन व अला आलिही व सह्बिही अजमईन अम्मा बाद०

लेखक ने राबिता आलमे इस्लामी की शर्तों की रोशनी में इस पुस्तक के लिखते समय अपने बारे में कुछ पंक्तियां भी लिखी थीं, चूंकि इस पर दो दहाइयां बीत चुकी हैं, इसी बीच हालात ने कई करवट ली है, इसलिए उचित समझा गया कि यह अंश नए सिरे से लिख डाला जाए।

वंश

सफ़ीउर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अकबर बिन मुहम्मद अली बिन अब्दुल मोमिन बिन फ़क़ीरुल्लाह मुबारकपुरी आज़मी

जन्म

मेरा जन्म 1942 ई० के मध्य का है। जन्म-स्थान हुसैनाबाद गांव है जो मुबारकपुर के उत्तर में एक मील की दूरी पर एक छोटी सी आबादी है। उत्तरी भारत में मुबारकपुर, ज़िला आज़मगढ़ का प्रसिद्ध ज्ञानात्मक और औद्योगिक क़स्बा है।

शिक्षा

मैंने बचपन में क़ुरआन का कुछ हिस्सा अपने दादा और चचा से पढ़ा, फिर 1948 ई० में मदरसा अरबीया दारुत्तालीम मुबारकपुर में दाख़िल हुआ। वहां छः साल रह कर प्राइमरी क्लास और मिडिल कोर्स की शिक्षा पूरी की। थोड़ी-सी फ़ारसी भी पढ़ी। इसके बाद जून 1954 ई० में मदरसा एह्याउल उलमू मुबारकपुर में दाख़िल हुआ और वहां अरबी भाषा, व्याकरण और कुछ दूसरे इस्लामी विषयों की शिक्षा लेनी शुरू की। दो साल बाद 1956 ई० में मदरसा फ़ैज़े आम, मऊनाथ भंजन पहुंचा। इस मदरसे को इस क्षेत्र में एक अहम दीनी मदरसे की हैसियत हासिल है और मऊनाथ भंजन, क़स्बा मुबारकपुर से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

फ़ैजे आम में मेरा दाख़िला मई 1956 ई० में हुआ। मैंने वहां पांच साल गुज़ारे और अरबी भाषा और व्याकरण और दीनी विषयों यानी तफ़्सीर, हदीस,

उसूले हदीस, फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह आदि की शिक्षा प्राप्त की। जनवरी सन् 1961 ई० में मेरी शिक्षा पूरी हो गई और मुझे विधिवत शहादतुत्तख़र्रुज (तक्मील की सनद) दे दी गई। यह सनदे फ़ज़ीलत फ़िश-शरीअः और फ़ज़ीलत फ़िलउलूम की सनद है और पढ़ाने और फ़त्वा देने की इजाज़त पर आधारित है।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे तमाम परीक्षाओं में बहुत अच्छे नम्बरों से कामियाबी हासिल होती रही।

पढ़ाई के ज़माने में मैं इलाहाबाद बोर्ड की परीक्षाओं में भी शामिल हुआ। फरवरी 1959 ई० में मौलवी और फरवरी 1960 ई० में आलिम की परीक्षाएं दीं और दोनों में फ़र्स्ट डिवीज़न से सफल हुआ।

फिर एक लम्बी मुद्दत के बाद अध्यापकों से मुताल्लिक़ नये हालात को देखते हुए मैंने फरवरी सन् 1976 ई० में फ़ाज़िले अदब (और फरवरी 1978 ई० में फ़ाज़िले दीनियात) का इम्तिहान दिया और अल्लाह का शुक्र है (दोनों में) फ़र्स्ट डिवीजन से सफल हुआ।

व्यावहारिक जीवन

सन् 1961 ई० में 'मदरसा फ़ैज़े आम' से फ़ारिग़ होकर मैंने ज़िला इलाहाबाद, फिर शहर नागपुर में पढ़ने-पढ़ाने और भाषण देने का काम शुरू कर दिया। दो साल बाद मार्च 1963 ई० में मदरसा फ़ैज़े आम के नाज़िमे आला (प्रमुख) ने मुझे पढ़ाने के लिए बुलाया, लेकिन मैंने वहां मुश्किल से दो साल बिताए थे कि हालात ने अलग होने पर मजबूर कर दिया। अगला साल 'जामियतुर-रिशाद' आजमगढ़ की भेंट चढ़ गया और फ़रवरी 1966 ई० से मदरसा दारुल हदीस मऊ के बुलाने पर वहां मुदर्रिस (अध्यापक) हो गया। तीन साल यहां बिताए और पढ़ाने के अलावा, नायब सदर मुदर्रिस (उप प्रधानाध्यापक) की हैसियत से पढ़ने-पढ़ाने के मामलों और अन्दरूनी इन्तिज़ामों की निगरानी और देख-भाल में भी शरीक रहा, फिर इस्तीफ़ा देकर मदरसा फ़ैज़ुल उलूम सिवनी की सेवा में जा लगा, जो मऊ नाथ भंजन से कोई सात सौ किलोमीटर दूर मध्य प्रदेश में स्थित है। वहां जनवरी 1969 ई० में मैंने पढ़ने-पढ़ाने का दायित्व निभाने के अलावा प्रधानाध्यापक की हैसियत से मदरसे के तमाम अन्दर-बाहर के प्रबन्ध की ज़िम्मेदारी भी संभालीं और जुमे का ख़ुतबा देना और पास-पड़ोस के देहातों में जा-जाकर दावत-तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) का काम करना भी अपने नित्य-प्रति के कामों में शामिल किया, फिर 1972 ई० के अन्त से मदरसा दारुत्तालीम मुबारकपुर में पढ़ाने की ज़िम्मेदारियां संभालीं और दो साल बाद अक्तूबर 1974 ई० में

जामिया सलफ़िया आ गया। जहां ज़िलहिज्जा 1408 हि० (जुलाई 1988 ई०) तक अनेकानेक सेवाओं में लगा रहा।

इसी बीच सन् 1407 हि० के आरंभ में 'मर्कज़ ख़िदमतुस्सुन्नः वस्सीरः अन-नब्वीया' के नाम से मदीना युनिवर्सिटी, मदीना मुनव्वरा में एक शोध-संस्थान की स्थापना हुई और मुझे उसकी ओर से सीरत के विषय पर सम्मिलित होने के लिए कहा गया। रज़ामंदी के बाद जब दफ्तरी और क़ानूनी मरहले तै हो चुके तो मैं मुहर्रम 1409 हि० (अगस्त 1988 ई०) में मदीना मुनव्वरा आ गया और शाबान के आख़िर 1418 हि० (दिसम्बर 1997 ई०) तक यहां सेवा करता रहा, फिर 24 रबीउल अव्वल 1419 हि० (19 जुलाई 1998 ई०) को अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ जमईयत अहले हदीस का अध्यक्ष चुन लिया गया।

पुस्तकें

लेखक पर यह अल्लाह की विशेष कृपा है कि उसे लिखने-लिखाने की शुरू से ही रुचि रही, चुनांचे शिक्षा पूर्ण करने के बाद मैंने इस लम्बी मुद्दत में लिखने-पढ़ने का कुछ न कुछ काम जारी रखा, और उर्दू और अरबी में कई पुस्तकें तैयार भी हुईं और छपीं भी। कुछ के मस्विदे भी नष्ट हो गए या ठंडे बस्ते में चले गए। कुछ पुस्तकों और अनुवादों के नाम इस तरह हैं—

उर्दू पुस्तकें

(1) तज़्किरा शेख़ुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब रह० (1972 ई०) यह पुस्तक चार बार छप चुकी है।

(2) तारीख़े आले सऊद (उर्दू सन् 1972 ई०) यह किताब दो बार छप चुकी है।

(3) क़ादियानियत अपने आईने में, (उर्दू एडीशन सन् 1976 ई०)

(4) फ़ित्ना-ए-क़ादियानियत और मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी (उर्दू एडीशन 1976)

(5) 'अर-रहीक़ुल मख़्तूम' (जो राबिता आलमे इस्लामी में पेश करने के लिए लिखी गई) बार-बार छप चुकी है।

(6) इंकारे हदीस हक़ या बातिल (उर्दू सन् 1977 ई०) प्रकाशित

(7) रज़्मे हक़ व बातिल (मुनाज़रा बजरडीह की रूदाद) एडीशन 1978 ई०

(8) इस्लाम और अदमे तशद्दुद (उर्दू सन् 1984) प्रकाशित (अंग्रेज़ी और हिन्दी में भी छप चुकी है।)

(9) अहले तसव्वुफ़ की कारस्तानियां (1986 ई० एडीशन)

(10) तजल्लियाते नुबूवत (1415 हि०) अरबी से अनुवाद

(11) मुख़्तसर इज़्हारुल हक़ (1417 हि०) अरबी से अनुवाद

(12) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिन्दू किताबों में (1417 ई०)

(13) क़ब्रों पर क़ुब्बे और मज़ारात की तामीर का शरई जायज़ा (1418 हि०) अरबी से अनुवाद

(14) शेख़ मुहम्मद अब्दुल वह्हाब का सलफ़ी अक़ीदा और दुनिया-ए-इस्लाम पर उसका असर (1420 हि०) अरबी से अनुवाद।

अरबी

(1) बहजतुन्नज़र फ़ी मुस्तलहि अह्लिल असर (1974 हि०) बार-बार छप रही है।

(2) इत्तिहादुल किराम तालीक़ बुलूग़ुल मराम लि इब्ने हजर अस्क़लानी सन् 1974 ई० दो बार छप चुकी है।

(3) अर-रहीक़ुल मख़्तूम (सन् 1976 ई०) बार-बार छप चुकी है। इसका संक्षिप्तीकरण भी तैयार है।

(4) अबराज़ुल हक़ वस्सवाब फ़ी मस्अलतिस्सफ़ूर वल हिजाब (1978 ई०) परदे के बारे में डा० मुहम्मद तक़ीउद्दीन हिलाली, मराकशी रह० के एक लेख का खंडन है जो पहले मजल्ला अल-जामियतुस-ल फ़ीया (बनारस) में क़िस्तवार छपी, फिर रियाज़ (सऊदी अरब) से पुस्तक-रूप में प्रकाशित हुई।

(5) तस्तूरुशशआब वद्दयानात फ़िल हिन्द व मजालुद्दावतिल इस्लामिया (1979 ई०) कुछ क़िस्तें मजल्ला अल-जामियतुस्सलफ़ीया (बनारस) में छप चुकी है।

(6) अल-फ़िरक़तुन्नाजिया वल फ़िरक़ुल इस्लामिया अल-उख़रा (1982 ई०)

(7) अल-अह्ज़ाबुस सियासीया फ़िलइस्लाम (1986 ई०)

(8) रौज़तुल अनवार फ़ी सीरतिन्नबीयिल मुख़्तार (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) (1993 ई०)

(9) अल-बशारातु बिमुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

(10) अल-बशारातु बिमुहम्मद सल्ल० इन्दल फ़रस (1415 हि०)

(11) अज़्वाउस्सिराज अल वह्हाज फ़ी शरहे सहीह मुस्लिम (1418 ई०)

इन पुस्तकों के अलावा जब फरवरी 1982 ई० से जामिया सलफ़ीया बनारस के तर्जुमान माहनामा मुहद्दिस प्रकाशित हुआ तो उसका सम्पादन का दायित्व भी मुझे सौंपा गया और सितम्बर 1988 ई० यानी मदीना मुनव्वरा के लिए रवानगी

तक मैं यह दायित्व बराबर निभाता रहा। (बीच में एक वर्ष कुछ क़ानूनी पेचीदगियों की वजह से 'मुहद्दिस' का प्रकाशन बन्द रहा। इस छः वर्षीय अवधि में धार्मिक, सामूहिक, ऐतिहासिक, आन्दोलनात्मक, जमाअती और राजनीतिक विषयों पर सम्पादकीयों, लेखों के रूप में कोई दो सौ लेख लिखे गए और अल्लाह की कृपा से उन्हें लोकप्रियता प्राप्त हुई।

व बिल्लाहित्तौफ़ीक़ सल्लल्लाहु अला नबीयिना मुहम्मदिंव-व अला आलिही व सह्बिही व बारिक व सल्लम

अपनी बात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अर-स-ल रसूलहू बिल हुदा व दीनिल हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अलद्दीनि कुल्लिही फ़-ज-अ लहू शाहिदंव-व मुबश्शि रंव-व नज़ीरा व दाअियन इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम मुनीरा व ज-अ-ल फ़ीहि उस-वतन ह-स-नतल-लि मन का-न यर्जुल्ला-ह वल यौमल आख-र व ज़-क-रल्ला-ह कसीरा॰ अल्लाहुम-म सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अला आलिही व सह्बिही व मन तबि-अहुम बिएहसानिन इला यौमिद्दीन व फ़ज-ज-र लहुम मनाबी-अर रह-मति वर-रिज़्वानि तफ़-जीरा॰ अम्मा बाद॰

यह बड़े हर्ष की बात है कि रबीउल अव्वल सन् 1396 हि॰ में पाकिस्तान के अन्दर आयोजित सीरत कान्फ्रेंस के अन्त पर राबिता आलमे इस्लामी ने सीरत के विषय पर लेखों की एक विश्व-प्रतियोगिता आयोजित करने का एलान किया, जिसका उद्देश्य यह है कि क़लमकारों में एक प्रकार की उमंग और उनकी ज्ञानपरक कोशिशों में एक प्रकार की एकरूपता पैदा हो। मेरे विचार से यह बड़ा मुबारक क़दम है, क्योंकि अगर गहराई से जायज़ा लिया जाए तो मालूम होगा कि हक़ीक़त में नबी की सीरत और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस्वा ही वह एकमात्र स्रोत है जिससे इस्लामी जगत की ज़िंदगी और इंसानी समाज के सौभाग्य के सोते फूटते हैं। आपकी बरकतों वाली ज़ात पर अनगिनत दरूद व सलाम हो।

फिर यह मेरा सौभाग्य होगा कि मैं भी इस मुबारक मुक़ाबले में शिर्कत करूं। लेकिन मेरी हैसियत ही क्या है कि सैयिदुल अव्वलीन वल आख़रीन की मुबारक ज़िंदगी पर रोशनी डाल सकूं। मैं तो अपने को धन्य इतने भर ही में समझता हूं कि मुझे आपकी रोशनी का कुछ हिस्सा मिल जाए, ताकि मैं अंधेरों में भटक कर हलाक होने के बजाए आपके एक उम्मती की हैसियत में आपके चमचमाते राजमार्ग पर चलता हुआ ज़िंदगी गुज़ारूं और इसी राह में मेरी मौत भी आ जाए और फिर आपकी शफ़ाअत की बरकत से अल्लाह मेरे गुनाहों को माफ़ कर दे।

एक छोटी सी बात अपनी इस किताब की लेखन-शैली के बारे में भी कहने की ज़रूरत महसूस कर रहा हूं और वह यह है कि मैंने किताब लिखने से पहले ही यह बात तै कर ली कि इसे बोझ बन जाने वाले विस्तार और अपनी पूरी बात

अदा न कर पाने वाले संक्षेप, दोनों से बचते हुए औसत दर्जे की मोटी किताब लिखूंगा, लेकिन जब सीरत की किताबों पर निगाह डाली तो देखा कि घटनाओं के क्रम और छोटी-छोटी बातों के विस्तार में बड़ा अन्तर है, इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि जहां-जहां ऐसी स्थिति पैदा हो, वहां वार्ता के हर पहलू पर नज़र दौड़ा कर और भरपूर छान-फटक करके जो नतीजा निकालूं, उसे असल किताब में लिख दूं और दलीलों, गवाहियों के विस्तार में न जाकर, मात्र प्रमुखता देने के कारणों का उल्लेख करूं, वरना किताब अनचाहे ही बहुत लम्बी हो जाएगी, अलबत्ता जहां यह डर हो कि मेरी खोज पाठकों के लिए चौंका देने का कारण बनेगी या जिन घटनाओं के सिलसिले में आम क़लमकारों ने कोई ऐसा चित्र प्रस्तुत किया हो, जो मेरे दृष्टिकोण से सही न हो, वहां दलीलों की ओर भी इशारा कर दूं।

ऐ अल्लाह ! मेरे लिए लोक-परलोक की भलाई मुक़द्दर फ़रमा। तू निश्चय ही माफ़ करने वाला, बड़ा मुहब्बती है, अर्श का मालिक है और बुज़ुर्ग व बरतर है।

—सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी
जामिया सलफ़ीया,
बनारस, हिंद

जुमा
24 रजब 1396 हि०
तद० 23 जुलाई 1976 ई०